नोट

इकाई–1: विषय की प्रकृति एवं महत्त्व
(Nature and Significance of the Subject)

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

1.1 सामाजिक संरचना में नातेदारी की भूमिका एवं महत्त्व (Role and Importance of Kinship in Social Structure)

1.2 सारांश (Summary)

1.3 शब्दकोश (Keywords)

1.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- नातेदारी के अर्थ को समझने में।
- नातेदारी की विशेषता एवं महत्त्व की जानकारी प्राप्त करने में।

प्रस्तावना (Introduction)

अंग्रेजी भाषा के 'Kinship' शब्द की हिन्दी संगोत्रता, बन्धुत्व, नातेदारी एवं स्वजन की गयी है। नातेदारी एवं विवाह जीवन के आधारभूत तथ्य हैं। यौन इच्छा विवाह को जन्म देती है और विवाह परिवार एवं नातेदारी को। सृष्टि के प्रारम्भ से ही जिन बातों ने व्यक्तियों को एकता के सूत्र में बांधने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है, उनमें आर्थिक हित और समान सुरक्षा महत्त्वपूर्ण हैं। सामूहिक सुरक्षा की भावना ने ही कई छोटे-मोटे संघों के निर्माण की प्रेरणा दी जो परिवार से लेकर राष्ट्र तक हैं। समान भाषा, धर्म, जाति एवं राष्ट्र के लोगों के बीच व्यक्ति अपने को अधिक सुरक्षित महसूस करता है, लेकिन इनसे भी अधिक सुरक्षित वह अपने को नातेदारों में पाता है, जिनके साथ उसके सामाजिक, नैतिक, आर्थिक हित जुड़े हुए हैं। वह राष्ट्रीयता, धर्म, प्रदेश सभी बदल सकता है, परन्तु नातेदारी नहीं,

नोट

इसमें रक्त का बन्धन है। अत: जंगली और असभ्य जनजातियों से लेकर सभ्य समाजों तक में इसे पुष्ट एवं विश्वसनीय माना जाता है।

संगोत्रता (नातेदारी) का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Kinship)–**चार्ल्स विनिक** ने संगोत्रता (नातेदारी) को परिभाषित करते हुए लिखा है, "संगोत्रता (नातेदारी) व्यवस्था में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त सम्बन्ध आ सकते हैं जो कि अनुमानित और वास्तविक वंशावली सम्बन्धों पर आधारित हों।"

रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार, "नातेदारी सामाजिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत वंश सम्बन्ध है जो कि सामाजिक सम्बन्धों के परम्परात्मक सम्बन्धों का आधार है।"

डॉ. रिवर्स के अनुसार, "संगोत्रता (बन्धुत्व) की मेरी परिभाषा उस सम्बन्ध से है जो वंशावलियों के माध्यम से निर्धारित तथा वर्णित की जा सकती है।"

लूसी मेयर के अनुसार, "बन्धुत्व में सामाजिक सम्बन्धों को जैविक शब्दों में व्यक्त किया जाता है।"

रॉबिन फॉक्स के अनुसार, नातेदारी की अत्यन्त सरल परिभाषा यह है कि, "नातेदारी केवल मात्र स्वजन अर्थात् वास्तविक, ख्यात अथवा कल्पित समरक्तता वाले व्यक्तियों के मध्य सम्बन्ध है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट है कि हम संगोत्रता (नातेदारी) में उन व्यक्तियों को सम्मिलित करते हैं जिनसे हमारा सम्बन्ध वंशावली के आधार पर होता है और वंशावली सम्बन्ध परिवार से पैदा होता है एवं परिवार पर ही निर्भर हैं। ऐसे सम्बन्धों को समाज की स्वीकृति आवश्यक है। कभी-कभी प्राणीशास्त्रीय रूप से सम्बन्ध न होने पर भी यदि उन सम्बन्धों को समाज ने स्वीकार कर लिया है तो वे नातेदार माने जाते हैं। उदाहरण के लिए, गोद लिया हुआ पुत्र पिता का असली पुत्र नहीं है, परन्तु उनके सम्बन्धों को समाज ने स्वीकार कर लिया है, अत: वे एक-दूसरे के नातेदार माने जाते हैं।

बहुपति विवाही टोडा जनजाति में बच्चे का प्राणीशास्त्रीय पिता कोई भी भाई हो सकता है, परन्तु सामाजिक रूप से वही भाई पिता माना जायेगा जिसने 'परसुतपिमी' संस्कार किया हो। यही बात हम देवर एवं साली विवाह में भी देख सकते हैं। देवर विवाह में एक पुरुष को अपने भाई की विधवा स्त्री से विवाह करने की स्वीकृति होती है। ऐसे विवाह से उत्पन्न सन्तानें मृत भाई की ही मानी जाती हैं। साली विवाह में एक व्यक्ति को अपनी मृत पत्नी की बहिन से विवाह करने की आज्ञा होती है और ऐसी बहिन को अपनी मृत बहिन का पद प्राप्त हो जाता है। अत: सामाजिक उद्देश्य के लिए रक्त या प्राणीशास्त्रीय सम्बन्ध नातेदारी में जरूरी नहीं है। इसका कारण यह है कि नातेदारी एक सामाजिक तथ्य (Social Fact) है जिसमें समाज की स्वीकृति महत्त्वपूर्ण है, सम्बन्धों की सामाजिक स्वीकृति के नियम भिन्न-भिन्न समाजों व स्थानों पर भिन्न-भिन्न हैं। इसका कोई सर्वमान्य तरीका नहीं है। नातेदारों में हम रक्त सम्बन्धियों एवं विवाह सम्बन्धियों दोनों को सम्मिलित करते हैं। रक्त सम्बन्धों को हम नातेदारी की आन्तरिक व्यवस्था कह सकते हैं तो विवाह सम्बन्धों को इसकी बाह्य व्यवस्था।

नोट्स भारत में प्राचीन समय में विवाह से पूर्व ही किसी लड़की के होने वाला पुत्र या विवाह के बाद पति की स्वीकृति से दूसरे द्वारा उत्पन्न पुत्र, जिसे 'क्षेत्रज' कहते थे, भी नातेदारी में सम्मिलित था।

1.1 सामाजिक संरचना में नातेदारी की भूमिका एवं महत्त्व (Role and Importance of Kinship in Social Structure)

नातेदारी के सिद्धान्तों को समझ लेने के बाद एक व्यक्ति समाज के अन्य पहलुओं को समझने में भी समक्षम हो जाता है। सरल और आदिम समाजों में नातेदारी एक वास्तविक संस्था है। फर्थ की मान्यता है कि नातेदारी एक ऐसी

छड़ है जिस पर एक व्यक्ति जीवन भर निर्भर रहता है, यह अगणित स्थितियों में उसके व्यवहार को नियन्त्रित करती है। नातेदारी का अध्ययन न केवल रोमांचक ही है अपितु उपयोगी भी है। सामाजिक संरचना में नातेदारी की भूमिका एवं महत्त्व को हम विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत निम्न प्रकार से प्रकट कर सकते हैं–

1. **विवाह एवं परिवार का निर्धारण**–नातेदारी ही यह तय करती है कि एक व्यक्ति के विवाह का क्षेत्र क्या होगा। किस प्रकार का विवाह निषिद्ध है, किसे मान्यता दी गयी है और किसे अधिमान्यता (Preference) । दूसरे शब्दों में, अन्तर्विवाह, बहिर्विवाह, समलिंग सहोदरज एवं विषमलिंग सहोदरज विवाह (Parallel cousin and cross cousin marriage), आदि का निर्धारण नातेदारी के आधार पर ही होता है। परिवार में रक्त एवं विवाह सम्बन्ध पर आधारित सदस्य पाये जाते हैं। दोनों ही प्रकार के सदस्यों को हम नातेदार कहते हैं। परिवार का विस्तार नातेदारी का विस्तार ही है। परिवार के प्रकार विभिन्न नातेदारों की भूमिका में पाये जाने वाले भेदों को प्रकट करते हैं। उदाहरण के लिए, मातृसत्तात्मक परिवार में भाई की भूमिका अपनी बहिन के परिवार में महत्त्वपूर्ण है, वही परिवार का संचालन करता है और वही सब प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र भी होता है। परिवार की शक्ति एवं सत्ता उसके हाथ में होती है। पति ऐसे परिवारों में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं करता है। इसके विपरीत पितृसत्तात्मक परिवारों में बहिन के परिवार में भाई की भूमिका नगण्य है। रैडक्लिफ ब्राउन जैसे मानवशास्त्री ने नातेदारी व्यवस्था का प्रकार्यात्मक विवेचन किया है। उसकी मान्यता है कि विवाह एवं नातेदारी एक-दूसरे के मध्य व्यवस्था उत्पन्न करते हैं।

2. **वंश, उत्तराधिकार एवं पदाधिकार का निर्धारण** (Determination of Descent, Inheritance and Succession)–नातेदारी वंशावली का निर्धारण करती है। वंशावली की लम्बाई प्रतिष्ठा का मापदण्ड होती है। परिवार, वंश, गोत्र, भ्रातृदल एवं अर्द्धांश नातेदारी के ही विस्तृत स्वरूप हैं। भूतकाल के वंश सम्बन्धियों का ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति महसूस करता है कि वह इतिहास-विहीन नहीं है, वरन् उसकी भी जड़ें हैं। एक व्यक्ति की सम्पत्ति एवं पद का हस्तान्तरण किन लोगों में होगा, कौन-कौन उसके दावेदार होंगे, यह नातेदारी के आधार पर भी तय होता है। नातेदारी का प्रारम्भिक अध्ययन वकीलों एवं विधिशास्त्रियों द्वारा सम्भवत: इसलिए किया गया था कि वे अधिकार, दावे, दायित्व, पितृ अधिकार, संविदा, पितृबन्धुता (Agnate), आदि का ज्ञान कर उन्हें कानूनी जामा पहनाना चाहते थे। वे साथ ही इस प्रकार के नियमों की भी रचना करना चाहते थे कि कौन किसका उत्तराधिकारी होगा तथा क्या किसे प्राप्त होगा? यदि नातेदार के बाद किसी अन्य को उत्तराधिकार का अधिकार प्राप्त होता है तब नातेदारी की व्याख्या की जाती है और नातेदारों में वरीयता के क्रम को निश्चित किया जाता है। पितृवंशीय एवं मातृवंशीय परिवारों में वंश उत्तराधिकार एवं वंश पदाधिकार के नियम भिन्न-भिन्न हैं। सभी प्रकार के समाजों में नातेदारी के सम्बन्धों (Kinship ties) का उपयोग सम्पत्ति के स्वामी तथा उत्तराधिकारियों, पदाधिकारियों तथा उसके उत्तरवर्ती अधिकारियों, आदि के मध्य सम्बन्धों को परिभाषित करने के लिए किया जाता है। लूसी मेयर की मान्यता है कि "सरल प्रविधि वाले समाजों में...... किसी व्यक्ति का समाज में स्थान, उसके अधिकार और कर्तव्य, सम्पत्ति पर उसका दावा, अधिकतर दूसरे सदस्यों के साथ उसके जन्मजात सम्बन्धों पर निर्भर होते हैं। ऐसे समाजों में संगठन के चाहे जो भी सिद्धान्त हों, प्राथमिक समूह बन्धुत्व से जुड़े रहते हैं......।"

3. **आर्थिक हितों की सुरक्षा** (Safeguard of Economic Interest)–मरडॉक लिखते हैं–नातेदारी समूह, एक व्यक्ति नहीं, वरन् द्वितीय रक्षा पंक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब एक व्यक्ति संकट अथवा कठिनाई में होता है अथवा जब उसे किसी आर्थिक कार्य को या सांस्कृतिक दायित्वों को पूरा करना होता है, संक्षेप में, जब उसे परिवार के बाहर सहायता की आवश्यकता हो जब वह अपने विस्तृत नातेदारी समूह की ओर सहायता के लिए निहार सकता है। अत: समुदाय अथवा सम्पूर्ण जाति में अन्य सदस्यों की अपेक्षा नातेदारों को उसे सहायता देने का दायित्व सर्वाधिक है। वह भी इसी प्रकार रिश्तेदारों से पारम्परिक दायित्वों में बंधा होता है। इसमें भी रक्त सम्बन्धी विशिष्ट महत्त्व रखते हैं क्योंकि वैवाहिक नातेदारों की तुलना में रक्त सम्बन्धियों को एक व्यक्ति अपने अधिक निकट महसूस करता है।

नोट

लूसी मेयर लिखते हैं, "विभिन्न समाजों में स्वीकृत बन्धुत्व के बन्धन लोगों की खेती तथा जायदाद पर अधिकार, समान हितों की पूर्ति में परस्पर सहायता तथा दूसरों पर आधिपत्य प्रदान करते हैं। प्रभुता प्राप्त लोगों पर यह दायित्व रहता है कि वे आश्रितों का कल्याण करें। आश्रितों का धर्म आज्ञा पालन है। सभी लोगों का कर्तव्य है कि ऐसे अवसरों पर जहाँ बन्धुत्व की मान्यता का प्रश्न है, परस्पर सहयोग करें।" इस प्रकार आर्थिक संकटों के समय नातेदार ही एक व्यक्ति को शरण देते हैं एवं उसकी सहायता करते हैं।

टास्क सामाजिक संरचना में नातेदारी की भूमिका एवं महत्त्व के बारे में क्या जानते हो?

4. **सामाजिक दायित्वों का निर्वाह** (Fulfilment of Social Responsibilities)–लोवी कहते हैं कि एक रिश्तेदार दूसरे रिश्तेदार को बिना फल की आशा किये हुए नि:शुल्क सेवाएं देता है, जबकि उन्हीं सेवाओं के लिए हमें बाह्य व्यक्ति को उसकी कीमत चुकानी होती है। रिश्तेदार एक नैसर्गिक परामर्शदाता होता है। वह कठिन परिस्थितियों में एक सहायक एवं युद्ध तथा शिकार की अवस्था में एक साथी होता है। इसी प्रकार से रिश्तेदरों की औरतें मिल-जुलकर कृषि कार्य करती हैं, घरेलू कार्यों में मद्द तथा एक-दूसरे के बालकों का पालन-पोषण करती हैं।

वर्तमान औद्योगिक एवं नौकरशाही के युग में एक व्यक्ति का मूल्यांकन नातेदारी के आधार पर न होकर योग्यता के आधार पर होता है। एक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने पद एवं राष्ट्र के प्रति निष्ठावान रहे, किन्तु नातेदारी दुराग्रही है, और विकासशील राष्ट्रों में तो नौकरशाही का तर्क नातेदारी की निष्ठाओं से हार जाता है। एक उच्च अधिकारी अपने से नीचे के अधिकारियों का चयन के समय योग्यता के स्थान पर सम्बन्धों की निकटता को महत्त्व देता है। यह हमारे लिए भाई-भतीजावाद है, लेकिन उसके लिए एक नैतिक कर्तव्य है। वर्तमान गतिशील समाज में नातेदारों के सम्बन्धों का विस्तार पिता-पुत्र सम्बन्धों से आगे महत्त्वपूर्ण नहीं है, और इनमें भी घनिष्ठता की कमी है। फिर भी वृद्ध माता-पिता को अकेले रहने देने या सुरक्षा घरों में रखने की बात ग्रामीण और आदिवासियों को चौंका देने वाली एवं अनैतिक प्रतीत होती है। आधुनिक समाज नातेदारी सम्बन्धों की कमी वाला समाज कहा जा सकता है। फिर भी उनमें नातेदारी के मनोभाव और दायित्व तो विद्यमान हैं ही। यदि हमारे सगे चाचा, मामा, बुआ, आदि का पुत्र दुर्दिन का मारा हमारे पास आता है तो उसकी सहायता करना हमारा कर्तव्य होता है। विक्टोरिया परिवार का प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति निष्ठावान केवल इसलिए ही था कि वे 'एक ही रक्त के थे।' इसी आधार पर एक नातेदार की मृत्यु अथवा अपमान का बदला लेना बन्धुओं का कर्तव्य माना जाता है। ऐंग्लो सैक्सन लोगों में यह नियम पाया जाता था। फिलीपीन के इफुगाओं कि नातेदार अपने समूह के व्यक्ति की हत्या का बदला लें। वास्तव में कौन इस दायित्व को निभायेगा, यह बन्धुत्व की निकटता पर आधारित था।

5. **मानसिक सन्तोष** (Mental Satisfaction)–नातेदारी के मनोभाव एक व्यक्ति को मानसिक सन्तुष्टि प्रदान करते हैं। एक व्यक्ति अपने पूर्वजों के चित्र घर में टांगता है, एलबमों का संग्रह करता है, सम्भवत: इसके पीछे सैकड़ों वर्षों के नातेदारी केन्द्रित अनुभवों की खुमारी है। मानवता का इतिहास इस बात का द्योतक है कि एक लम्बी अवधि तक मानव जाति नातेदारी पर आधारित समूहों में रही है। व्यक्ति का स्वास्थ्य, सुरक्षा जीवन सभी कुछ नातेदारों के हाथ में था। नातेदारी विहीन व्यक्ति अपने को बिना सामाजिक प्रतिष्ठा वाला एवं निकृष्ट रूप में मृत व्यक्ति के समान ही मानता था। मनुष्य की एक प्रवृत्ति यह है कि वह अपरिचित से डरता है और परिचित पर विश्वास करता है। रक्त सम्बन्धी हमारे सबसे अधिक परिचित व्यक्ति हैं क्योंकि वे हमारे ही अंग के हिस्से समझे जाते हैं। नातेदारों के बीच अपने को पाकर एक व्यक्ति अपार मानवीय आनन्द, प्रसन्नता और सन्तोष महसूस करता है।

नोट

> *क्या आप जानते हैं* हमारी औद्योगिक सभ्यता की माँगें हमें अवैयक्तिक, नौकरशाही वाली विवेकपूर्ण सामाजिक संरचना की ओर अग्रसर करती हैं।

6. **मानवशास्त्रीय ज्ञान का आधार** (Basis for Anthropological Knowledge)–मानवशास्त्रीय अध्ययन में नातेदारी का ज्ञान एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रारम्भिक मानवशास्त्रियों ने अधिकांश अध्ययन नोतदारी से ही प्रारम्भ किये थे। मॉर्गन, मैक्लीनन, हेनरी मेन, लोवी, फ्रेन्ज बोआस, मैलिनोवस्की, रैडक्लिफ ब्राउन, ईवान्स प्रिचार्ड, रिवर्स, सैलिगमे, आदि प्रमुख मानवशास्त्रियों के अध्ययन एक या एकाधिक जनजातियों की नातेदारी व्यवस्था, परिवार एवं विवाह, आदि से सम्बन्धित थे। वे नातेदारी के अध्ययन के आधार पर सामाजिक संरचना को समझना चाहते थे। साथ ही वे समाज एवं संस्थाओं के विकास में भी रुचि रखते थे। नातेदारी का अध्ययन इस दिशा में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रारम्भिक समाजों में वंशानुक्रम समूह की मूलभूत राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और क्षेत्रीय इकाइयाँ रही हैं।

मैक्लीनन ने उन अवस्थाओं का उल्लेख किया है जिनसे सम्पूर्ण मानवता की नातेदरी एवं विवाह की संस्थाएँ गुजरी हैं। उनकी मान्यता है कि प्रारम्भ में नातेदारी की गणना स्त्रियों के माध्यम से होती थी, पुरुषों के माध्यम से गणना का विकास बाद के समय में हुआ है। मैक्लीनन से पूर्व हेनरी मेन ने भारोपीय परिवारों का अध्ययन किया और बताया कि पितृ-सत्तात्मक संयुक्त परिवार पिता-पुत्रों का सम्पत्ति पर सम्मिलित अधिकार वाला परिवार था और भारत में ऐसा परिवार नातेदारी की प्रमुख कड़ी था। मॉर्गन ने न्यूयार्क राज्य की इरोक्वीस जनजाति का अध्ययन किया। उन्होंने वर्गात्मक संज्ञा व्यवस्था के आधार पर यह माना है कि परिवार एवं विवाह का विकास आदिम यौन साम्यवाद से हुआ। मॉर्गन द्वारा प्रेरित होकर ही एक लम्बे समय तक मानवशास्त्री नातेदारी शब्दावली का अध्ययन करते रहे। इसीलिए ही आधे से अधिक नातेदारी का साहित्य केवल नातेदारी शब्दावली से भरा है। लोवी एवं बोआस उद्‌विकासीय योजनाओं के विरुद्ध थे। मैलिनोवस्की ने ट्रोब्रियाण्डा द्वीपवासियों का अध्ययन कर नातेदारी के अध्ययन कर नातेदारी के अध्ययनों को नव-जीवन प्रदान किया। आपने नातेदारी के मध्य भावनाओं एवं मनोभावनाओं का अध्ययन किया है। रैडक्लिफ ब्राउन ने भी नातेदारी शब्दावली में रुचि दिखायी एवं तुलनात्मक उपागम (Comparative approach) का विकास किया। उसने अधिकारों एव दायित्वों को स्पष्ट करने के लिए नातेदारी तन्त्र एवं सामाजिक संरचना के अध्ययन पर जोर दिया है।

ईवान्स प्रिचार्ड ने 1940 में दक्षिणी सूडान के न्यूर लोगों पर एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें नातेदारी समूहों पर आधारित समूहों का अध्ययन सम्मिलित था। मेयर फोरटेस ने आधारित समूहों का अध्ययन सम्मिलित था। मेयर फोरटेस ने 1945 में टालेन्सी लोगों के विवाह, वंशानुक्रम एवं नातेदारी का अध्ययन कर एक पुस्तक प्रकाशित की। मरडॉक ने अपनी पुस्तक **'सोशल स्ट्रक्चर'** में उद्‌विकास के प्रति रुचि दिखायी। लेवी स्टॉस ने नातेदारी शब्दावली, विवाह-मैत्री (Marriage alliance), विवाह द्वारा स्त्रियों के स्थान की विधियों, आदि का उल्लेख किया है। डॉ. रिवर्स एवं अनेक भारतीय मानवशास्त्रियों ने भी नातेदारी के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कर मानवशास्त्रीय ज्ञान को समृद्ध बनाया है। नातेदारी के आधार पर मानवशास्त्र में अध्ययन के लिए मॉडल भी विकसित हुए जिनका उपयोग नातेदारी तन्त्रों को समझने के लिए किया गया है।

विभिन्न समाजों में नातेदारी के अध्ययन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए नेल्स ग्रेवर्न ने कुछ कारणों का उल्लेख किया है जिन्होंने मानवशास्त्रियों को ऐसे अध्ययन हेतु प्रेरित किया है। वे कारण इस प्रकार हैं–

1. नातेदारी व्यवस्थाएँ सर्वव्यापी हैं।
2. सभी मानव समाजों की संरचना में थोड़े-बहुत अन्तर के साथ नातेदारी व्यवस्थाएँ हमेशा महत्त्वपूर्ण होती हैं।

नोट

3. मानवशास्त्रियों ने जिन समाजों का परम्परागत रूप से अध्ययन किया है, उनमें अधिकतर नातेदारी व्यवस्था सामाजिक संगठन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त रहा है।
4. नातेदारी व्यवस्थाएँ अपेक्षाकृत रूप से अधिक सरलता से स्पष्ट की जा सकती हैं तथा उनका विश्लेषण भी सरलता से समझा जा सकता है।
5. मानवशास्त्र में विभिन्न समाजों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है कि नातेदारी एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्था है तथा यह संस्था समाज की संस्था से भिन्न है। इसने सामाजिक मानव-शास्त्रियों का ध्यान नातेदारी के अध्ययन की ओर आकृष्ट किया।
6. सामाजिक मानवशास्त्र के उद्भव से पूर्व अन्य सामाजिक वैज्ञानिकों ने समाज के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया। इन लोगों ने नातेदारी व्यवस्था के अध्ययन की ओर ध्यान नहीं दिया। सामाजिक मानवशास्त्रियों ने इस उपेक्षित विषय के अध्ययन के प्रति अपनी रुचि दिखायी।

इस प्रकार नातेदारी के अध्ययन ने मानव विकास एवं सामाजिक संरचना को समझने में महत्त्वपूर्ण योग प्रदान किया है। उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट है कि नातेदारी के अध्ययन का दिनों-दिन महत्त्व बढ़ता ही जा रहा है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

1. रेडिक्लिफ ब्रउन के अनुसार ········· सामाजिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत वंश संबंध है जो कि सामाजिक संबंधों के परम्परात्मक संबंधों का आधार है।
2. डॉ. रिवर्स के अनुसार ········· मेरी परिभाषा उस संबंध से है जो वंशावलियों के माध्यम से निर्धारित तथा ········· की जा सकती है।
3. मेयर फोरटेस ने आधारित ········· का अध्ययन सम्मिलित था।

1.2 सारांश (Summary)

- यौन इच्छा विवाह को जन्म देती है तथा विवाह परिवार एवं नातेदारी को।
- नातेदारी प्रणाली में कल्पित तथा वास्तविक वंशानुगत बंधनों पर आधारित समाज द्वारा मान्य संबंधों को सम्मिलित किया जाता है।
- नातेदारी वंशावली का निर्धारण करती है।
- नातेदारी विवाह का क्षेत्र तय करती है।
- सभी मानव समाजों की रचना में थोड़ा-बहुत परिवर्तन के साथ नातेदारी विद्यमान रहती है।

1.3 शब्दकोश (Keywords)

1. **नातेदारी व्यवस्था (Kinship system)**–किसी समाज में प्रस्थिति एवं भूमिकाओं की एक प्रथानुगत व्यवस्था जो निकटस्थ स्वजनों के व्यवहार को संचालित एवं नियंत्रित करती है, नातेदारों व्यवस्था कहलाती है।
2. **आर्थिक हितों की सुरक्षा**–नातेदारी समूह, एक व्यक्ति नहीं, वरन् द्वितीय रक्षा पंक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. नातेदारी से आप क्या समझते हैं?
2. सामाजिक संरचना में नातेदारी के महत्त्व एवं भूमिका क्या है?

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. नातेदारी 2. संगोत्रता (बन्धुत्व), वर्णित 3. समूहों।

1.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. समाजशास्त्र विश्वकोश–हरिकृष्ण रावत।
2. सामाजिक मानवशास्त्र–मजुमदार एवं मदान।